Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - 1 (Hons)
Paper - I
Indian Philosophy

"Common features of Indian Philosophy"

(भारतीय दर्शन का आधारभूत रूप)

'दर्शन' सम्पूर्ण विश्व को समझने का एक निष्पक्ष तथा बौद्धिक प्रयास है। 'दर्शन' शब्द 'दृश्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है— जिसके द्वारा देखा जाये। दर्शन का अध्ययन सिर्फ ज्ञान प्राप्ति के लिए ही नहीं वरन् जीवन के चरम उद्देश्य 'मोक्ष' की प्राप्ति के लिए किया जाता है। भारतीय दर्शन में ब्रह्म का साक्षात्कार हम मूलतः अनुभूतिवाद के द्वारा करते हैं। इसी को 'सम्यक् दर्शन' कहते हैं। मनु का कथन है—

सम्यक् दर्शन सम्पन्नः कर्मभिर्न बध्यते।
दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते।

भारतीय दर्शन का क्षेत्र बड़ा ही विस्तृत है, इसके अन्तर्गत दो तरह के दर्शन पाये जाते हैं—

1. आस्तिक दर्शन (orthodox)
2. नास्तिक दर्शन (Heterodox)

1. आस्तिक दर्शन (orthodox) — वेद की प्रामाणिकता में विश्वास करता है। इसके अन्तर्गत न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, तथा वेदान्त आते हैं।

2. नास्तिक दर्शन वेद को नहीं मानते हैं। इसके अन्तर्गत चार्वाक, जैन, बौद्ध आते हैं।

सिर्फ 'चार्वाक दर्शन' को छोड़कर कुछ सामान्य एवं मुख्य विशेषताएँ हैं जो सभी दर्शनों में पाये जाते हैं।

आस्तिक और नास्तिक दर्शन में भारतीय संस्कृति की छाप गहरा रूप में पड़ गयी है। जिसके कारण इनकी आपसी भिन्नताओं के बावजूद इनके दर्शनों में भी साम्य पाया जाता है ये सम भारतीय दर्शन का नैतिक तथा आध्यात्मिक साम्य कहे हैं।

दर्शन ही किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति का मूल्यांकन करता है।। भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषतायें भारतीय विचारधारा के स्वरूप को पूर्णतः प्रकाशित करने में समर्थ है। इसलिए इन विशेषताओं का भारतीय दर्शन में अत्यधिक महत्व है।

भारतीय दर्शन की आधारभूत सामान्य विशेषतायें अनेक हैं—

1 भारतीय दर्शनों का सबसे महत्वपूर्ण तथा मूलभूत साम्य यह है कि जितने भारतीय दर्शन हैं सभी मानो व्यावहारिक जीवन के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के साधन हैं। चार्वाक के भौतिकवाद से लेकर शंकर के वेदान्त तक जितने दर्शन हैं सभी योग्यता तथा स्वभाव के अनुसार विचारमय जीवन बिताने के लिए भिन्न-भिन्न मार्ग हैं इसी कारण विभिन्न दर्शनों के अनुयायियों का अधिकार भेद निरूपित होता था। अतः सभी दर्शन व्यवहार के योग्य

होते थे।

भारतीय दर्शन की दूसरी विशेषता यह है कि यहाँ के दार्शनिक ने संसार को दुःखमय माना है। दर्शन का विकास ही भारत में आध्यात्मिक असन्तोष के कारण हुआ है। विश्व में तीन प्रकार के दुःख हैं (i) आध्यात्मिक (ii) आधिभौतिक (iii) आधिदैविक।

कुछ विद्वानों ने भारतीय दर्शन को निराशावादी (Pessimistic) कहा है लेकिन हम देखते हैं कि भारतीय दर्शन का आरम्भ 'निराशावाद' में होना प्रमाणपूर्ण है क्योंकि वह 'आशावाद' को सौंपकर चलता है। इसलिए उनका यह तर्क भ्रान्त मूलक है।

3. भारतीय दर्शन की तीसरी विशेषता यह है कि चार्वाक को छोड़कर यहाँ का प्रत्येक दार्शनिक आत्मा की सत्ता में विश्वास करता है। जिसके फलस्वरूप भारतीय दर्शन अध्यात्मवाद का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ के दार्शनिकों ने आत्मा को अमर माना है। आत्मा और शरीर में मुख्य अन्तर यह है कि आत्मा अविनाशी है जबकि शरीर का विनाश होता है।

4. भारतीय दर्शन में चार्वाक को छोड़कर सभी दार्शनिक 'कर्म' सिद्धान्त को मानते हैं। जैसा हम बोते हैं वैसा ही हम काटते हैं। कर्म कभी-कभी शक्तिरूप

में भी प्रयुक्त होता है। जिसके फलस्वरूप कर्मों की उत्पत्ति होती है। इस दृष्टिकोण से कर्म तीन प्रकार के होते हैं। ... संचित कर्म, प्रारब्ध कर्म और संचीयमान कर्म।

5. चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय दार्शनिक पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। बार-बार जन्म ग्रहण करना ही पुनर्जन्म है। बुद्ध ने पुनर्जन्म की व्याख्या उपमा के सहारे व्यक्त किया है "अन्न की तरह मानव का नाश होता है और अन्न की तरह उसका पुनः पुनर्जन्म भी होता है। गीता में पुनर्जन्म की व्याख्या सुन्दर ढंग से की गयी है, जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र के जीर्ण हो जाने पर नवीन वस्त्रों को धारण करता है। उसी प्रकार आत्मा जर्जर एवं वृद्ध शरीर को छोड़कर नवीन शरीर धारण करती है।

6. चार्वाक को छोड़कर भारत के प्रत्येक दार्शनिक अज्ञान को बन्धन का मूल कारण मानते हैं। अज्ञान के वशीभूत होकर ही मनुष्य सांसारिक दुःखों को झेलता है तथा बार-बार जन्म ग्रहण करता है। अज्ञान के नष्ट हो जाने के बाद

बन्धन स्वतः नष्ट हो जाता है।
सभी दर्शनों में, चार्वाक को छोड़कर, मोक्ष को जीवन का (पुरुषार्थ) परम लक्ष्य माना जाता है। भारतीय दर्शनों में मोक्ष की आध्यात्मिक प्रधानता होने के कारण ही मोक्ष दर्शन माना जाता है।

8. भारतीय दर्शन में किसी न किसी प्रकार योगाभ्यास अथवा योग की भी चर्चा हुई है। यद्यपि योग की व्याख्या पूर्णरूपेण योग दर्शन में हुई है फिर भी योग पद्धति की व्याख्या न्यूनाधिक रूप में न्याय, वैशेषिक, बौद्ध, जैन, सांख्य, मीमांसा और वेदान्त दर्शनों में की गयी है। अतः भारतीय विचारधारा में योग की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

9. चार्वाक को छोड़कर भारत का प्रत्येक दार्शनिक विश्व को एक रंगमंच मानता है जिसपर मानव मन और इन्द्रिय से युक्त होकर आता है और अपने कर्मों का प्रदर्शन करता है। मानव के कर्मों पर मूल्यांकन के दृष्टिकोण से दृष्टिपात किया जाता है। अपने वर्तमान जीवन के कर्मों को सफलतापूर्वक करने के फलस्वरूप वह अपने भविष्य जीवन को सुनहला बना सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को नैतिक व्यवस्था में आस्था रखकर विश्व रूपी रंगमंच का सफल अभिनेता

बनने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। सभी भारतीय दर्शनों में चार्वाक को छोड़कर आत्म संयम पर जोर दिया गया है। सत्य की प्राप्ति के लिए आत्म संयम नितांत आवश्यक माना गया है। आत्मसंयम का अर्थ इन्द्रियों सुख-वैभव वासना आदि का निरोध और ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों का नियंत्रण समझा जा सकता है। भारतीय दर्शन में इन पाशाविक प्रवृत्तियों के नियंत्रण के उद्देश्य से ही आत्म संयम पर बल दिया गया है।

11. भारतीय दर्शन में जो प्रधान आस्तिक मत है उसमें धर्म की महत्वपूर्ण रूप से बतलाई गई है। दर्शन और जीवन में निकट सम्बन्ध रहने के कारण दर्शन और धर्म की सरिता साथ-ही-साथ प्रवाहित हुयी है। भारतीय दर्शन में धर्म का मूल कारण यह है कि दोनों का उद्देश्य एक है। दर्शन का उद्देश्य है मोक्षप्राप्ति मोक्ष का अर्थ है दुःखों से निवृत्ति। धर्म का उद्देश्य भी जीवन से छुटकारा पाना है। अतः भारतीय दर्शन में धर्म की प्रधानता दी गयी है।

12. प्रमाण विज्ञान - भारतीय दर्शन का प्रधान अंग है। यहाँ ज्ञान को 'प्रमा' कहते हैं जिसके द्वारा यथार्थ ज्ञान उत्पन्न

होता है इसको प्रमाण कहते हैं। प्रत्येक दर्शन में प्रमाण की व्यवस्था और उसके स्वरूप पर विचार किया गया है। प्रत्येक दर्शन में विभिन्न प्रमाणों की संख्या को लेकर मतभेद है। इन प्रमाणों का भारतीय दर्शन में सर्वाधिक महत्व है क्योंकि प्रत्येक दर्शन का तत्व विज्ञान उसके प्रमाण - विज्ञान पर ही अवलम्बित है।

(13) भारतीय दर्शन की यह विशेषता है कि यहाँ के विचारों ने श्रुत के प्रति आस्था का प्रदर्शन किया है इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि सभी आस्तिक दर्शनों में वेद की प्रमाणिकता पर बल दिया गया है। क्योंकि वेद में सत्य का साक्षात दर्शन अन्तर्ज्ञान के [illegible] गया है। अन्तर्ज्ञान का स्थान तार्किक ज्ञान से ऊँचा है।

(14.) शंकर को छोड़कर भारत का प्रत्येक दार्शनिक जगत् की सत्यता में विश्वास करता है। इसप्रकार उपर्युक्त भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ हैं।